इकाई 13 ब्राह्म वर्ष, विष्णु वर्ष, शिव वर्ष, देवीवर्ष

इकाई की रूपरेखा

13.0 अधिगम प्रतिफल

13.1 प्रस्तावना

13.2 ब्राह्म वर्ष की गणना

13.3 विष्णु वर्ष, शिव वर्ष, देवीवर्ष की गणना

13.4 काल की असीमितता तथा अनंतता का समाजविज्ञान

13.5 अभ्यास/बोध प्रश्न

13.6 सारांश

13.7 शब्दावली

13.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

13.0 अधिगम प्रतिफल

अभी तक इस पाठ्यक्रम में हमने भारतीय कालगणना की विभिन्न इकाइयों के बारे में पढ़ा है। हमने देखा है कि भारतीय कालगणना में सूक्ष्मतम इकाइयां भी हैं और कल्प जैसी विशालतम इकाइयां भी हैं। अब हम भारतीय कालगणना की एक विशेषता जो काल को महाकाल या फिर अनंत के रूप में मानती है, के बारे में पढ़ेंगे। इस इकाई के अध्ययन से हम यह जानने में सक्षम होंगे कि:-

- भारतीय कालगणना में काल को कितना विशाल माना गया है?
- ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा देवी वर्षों का क्या तात्पर्य है?
- काल के इस विशाल प्रवाह में हम और हमारी सृष्टि की स्थिति क्या है?

13.1 प्रस्तावना

मन्वन्तर और कल्पों के बाद की जो भी गणनाएं हैं, सृष्टि की विशालता और काल की व्यापकता को बतलाती हैं। उसका वास्तविक गणनाओं से संबंध कम ही होता है। उदाहरण के लिए आज हम प्रकाशवर्ष की जिस इकाई से गणना करते हैं, वह केवल कागजों पर ही की जा सकती है, उसका व्यावहारिक प्रयोग शून्य ही है। वह केवल इस ब्रह्मांड की विशालता को ही स्पष्ट करती है। यह हमें ध्यान रहना चाहिए कि पृथिवी की कोई भी भौतिक वस्तु सौर मंडल के घेरे को पार नहीं कर सकती।

जब हम सृष्टि और ब्रह्मांड की विशालता और उसके परिप्रेक्ष्य में काल की महनीयता की चर्चा करते हैं तो कुछ मूलभूत बातें हमें ध्यान में रखनी चाहिए। पहली बात है कि हमारी पृथिवी एक आवरण में उसी प्रकार लिपटी हुई है, जैसे कि गर्भ में भ्रूण एक झिल्ली में बंद रहता है। इससे पृथिवी ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं और विकिरणों के हानिकारक प्रभावों से बची रहती है और तभी

यहाँ जीवन संभव होता है। इसी प्रकार हमारा सौर मण्डल भी एक आवरण से घिरा हुआ है और उसके कारण वह सौर मण्डल से बाहर की ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं तथा विकिरणों से बचा रहता है। हमारे सौर मण्डल से बाहर जाना पृथिवी के किसी भी भौतिक पदार्थ के लिए संभव नहीं है। इसलिए प्रकाशवर्षों में जो दूरी हम मापते हैं, वह हमारे व्यावहारिक प्रयोग के लिए नहीं है। वह केवल ब्रह्मांड की विशालता को समझने के लिए है।

इसी प्रकार भारतीय मनीषियों ने ब्रह्मांड की अनंतता और काल के चक्र को समझाने के लिए कल्प से आगे की इकाइयों की गणना की है। कल्प से आगे की गणनाओं में ब्राह्म वर्ष, विष्णु वर्ष, शिव वर्ष और देवी वर्ष हैं।

13.2 ब्राह्म वर्ष की गणना

पिछली इकाई में हमने जाना कि पृथिवी का वर्तमान सृष्टि चक्र कल्प कहलाता है, जो कि ब्रह्मा का एक दिन होता है। यहाँ हम यह भी ध्यान रखें कि कालगणना मे प्रयुक्त ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि नाम किसी व्यक्ति अथवा देव विशेष के नाम नहीं हैं। ये काल की इकाइयां मात्र ही हैं। कल्प जो कि समय की इकाई है, को ब्रह्म इस नाम से कहने के पीछे भी कारण है। जैसे की प्रथम पाठ्यक्रम में "ज्योतिष" शब्द का अर्थ बताते हुए कहा था कि ये सब शब्द संस्कृत भाषा के हैं। और इस भाषा की विशेषता है कि जिन अर्थों में इसके शब्दों का प्रयोग होता है उसको धातु कहते हैं। तो यहाँ 'ब्रह्म' इस शब्द की धातु "बृह" है जिसका अर्थ होता है "विस्तार" अर्थात् बढ़ना।

ब्रह्मा का एक दिन यानी मनुष्यों के चार अरब 32 करोड़ वर्षों का है। इतने ही काल की रात्रि भी होगी। इस प्रकार मनुष्यों के 8 अरब 64 करोड़ वर्षों का ब्रह्मा का एक अहोरात्र होता है यानी ब्रह्मा के दो कल्पों का एक अहोरात्र हुआ।

एक वर्ष में कुल 360 अहोरात्र यानी दिन-रात होते हैं, यानी ब्रह्मा के एक वर्ष में कुल 720 कल्प होंगे। यही ब्राह्म वर्ष की गणना है। ब्रह्मा की कुल आयु सौ वर्ष की है। इसका तात्पर्य हुआ कि वर्तमान ब्रह्मांड की कुल आयु होगी 720 × 100 = 72000 कल्प। इसे निम्न तालिका से हम समझ सकते हैं –

ब्रह्मा का एक पल	2400000 मानवी वर्ष
ब्रह्मा का एक दिन	4,32,00,00,000 मानवी वर्ष
ब्रह्मा का एक अहोरात्र	8,64,00,00,000 मानवी वर्ष
ब्रह्मा का एक वर्ष	31,10,40,00,00,000 मानवी वर्ष
ब्रह्मा के सौ वर्ष (वर्तमान ब्रह्मांड की कुल आयु)	31,10,40,00,00,00,000 मानवी वर्ष

ब्रह्मा की पूर्णायु यानी सौ वर्ष को पर कहते हैं। ब्रह्मा के सौ वर्ष व्यतीत होने पर यह ब्रह्मांड नष्ट होगा और फिर नए ब्रह्मांड की सृष्टि प्रारंभ होगी। यानी सृष्टि की रचना के कई चरण हैं। एक चरण पृथिवी पर मानवों की सृष्टि होने और उसके नष्ट होने का है। यह प्रक्रिया प्रत्येक मन्वन्तर में होती है। यानी एक कल्प में कुल 14 बार होगी। दूसरा चरण है पृथिवी की रचना और उसके नष्ट होने का है। इसके बाद तीसरा चरण है- संपूर्ण ब्रह्मांड की सृष्टि होने और उसके नष्ट होने का। इस ब्रह्मांड की कुल आयु 31 नील, 10 खरब, 40 अरब वर्षों की है। यूरोपीय भाषा में कहें तो

यह काल होगा 31 क्वाड्रिलियन, 10 ट्रिलियन, 40 बिलियन वर्ष।

प्रश्न उठता है कि यदि ब्रह्मांड की कुल आयु इतनी है तो अभी तक इसकी कितनी आयु बीती है? क्या इसकी कोई गणना भारतीय कालगणना में मिलती है? उत्तर है, हाँ, मिलती है। हम हरेक कर्मकांड में जो संकल्प लेते हैं, उसमें वर्तमान ब्रह्मांड की आयु भी गिनते हैं। वहाँ हम कहते हैं - द्वितीये परार्थे। ब्रह्मा की कुल आयु को पर कहते हैं। इसे आधा करें तो ब्रह्मा के पचास वर्ष का एक परार्ध होगा। भारतीय मनीषियों की कालगणना के अनुसार वर्तमान ब्रह्मांड यानी ब्रह्मा के पचास वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। यह ब्रह्मा का 51वाँ वर्ष चल रहा है और इसमें भी श्वेत वाराह कल्प चल रहा है। इस प्रकार वर्तमान ब्रह्मांड के 15,55,20,00,00,00,000 यानी 15 नील, 55 खरब और 20 अरब वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इस कालखंड में 36000 बार पृथिवी का निर्माण और विनाश हो चुका है।

13.3 विष्णु, शिव तथा देवी वर्ष की गणना

जैसा कि हम पहले ही जान चुके हैं कि इस ब्रह्मांड की आयु के बाद की गणनाएं केवल सृष्टि रचना तथा काल की अनंतता और व्यापकता को स्पष्ट करने के लिए किया गया है। इसलिए इनका वर्णन सामान्य ज्योतिष के ग्रंथों में प्राप्त नहीं होता। इनका वर्णन परमात्मा की विभिन्न शक्तियों की उपासना करने वाले ग्रंथों में मिलता है। काल अथवा महाकाल अंततः उस सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक परमात्मा का ही एक स्वरूप है। इसलिए काल को ही परमात्मा भी कहा जाता है। पूर्व की इकाइयों में हम यह पढ़ चुके हैं कि काल को भारतीय दर्शन ग्रंथों में इस समस्त सृष्टि का निर्माता और विनाशकर्ता कहा गया है। इसी प्रकार काल को अक्षर और अविनाशी भी कहा गया है। यानी सभी का क्षरण होता है, परंतु काल का क्षरण नहीं होता। काल को अक्षर कहने का अभिप्राय यही है कि पृथिवी तथा ब्रह्मांड तो नष्ट होते हैं, परंतु काल फिर भी चलता रहता है। इस बात को ही स्पष्ट करने के लिए ब्राह्म वर्ष से ऊपर की गणनाएं की गई हैं।

ब्राह्म वर्ष से ऊपर की गणना करते हुए बृहत्पाराशर स्मृति में कहा गया है – ब्रह्मा की संपूर्ण आयु विष्णु का एक घड़ी का काल है। एक घड़ी का अर्थ होता है आधा मुहुर्त। एक दिन में कुल 30 मुहुर्त यानी 60 घड़ियां होती हैं। यानी विष्णु का एक दिन 6000 ब्राह्म वर्षों का होता है। इसे यदि हम 360 से गुना करें तो विष्णु वर्ष का काल मिलेगा। विष्णु की पूर्णायु सौ वर्ष की है यानी $6000 \times 360 \times 100 = 21,60,00,000$ ब्राह्म वर्ष। इसे यदि हम 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों से गुणा करेंगे तो मानवी वर्षों में विष्णु की पूर्णायु का काल मिलेगा।

यहाँ यह 'विष्णु' शब्द भी वर्तमान में जिस शक्ति का वाचक है, वह नहीं है। बल्कि यह भी समय की एक इकाई है जो ब्रह्म इकाई से बढ़ी है। उतनी बढ़ी इकाई को स्मरण रखना तथा आगे गणना करना सम्भव वहीं हो सकता, अत: बड़ी संख्या को सुगमता के लिए एक नया नाम दिया जाता है। यहाँ भी वही ध्यान रखना है कि "विष्णु" शब्द संस्कृत भाषा का है, जिसकी धातु है- "विष्लृ" जिसका अर्थ होता है व्यापक। अत:कह सकते हैं कि पिछली समाय की इकाई जो कि 'ब्रह्म' थी उस से यह बड़ी है अर्थात् व्यापक है अत: इस काल की इकाई को एक नाम "विष्णु' दिया, जो कि नाम के अनुकूल ही है ।

इसके आगे के काल की गणना करते हुए कहा गया है कि विष्णु की पूर्ण आयु का 12 लाख गुणा काल शिव की आधी कला होता है। एक दिन में कुल 900 कला होती है। यानी विष्णु के

सौ वर्ष के 12 लाख गुणा का 900 गुणा काल शिव का एक दिन है। इसे यदि हम 360 से गुणा करें तो वह शिव का एक वर्ष होगा। शिव की भी पूर्ण आयु 100 वर्ष की है। इसे रूद्र की आयु भी कहा गया है। शिव या रूद्र की यह पूर्णायु को यदि हम 10 करोड़ से गुणा करें तो वह देवी यानी जगदम्बा का एक त्रुटि होगी। एक क्षण में 2700 त्रुटि होती है। यानी एक दिनरात में 9,11,25,000 त्रुटियां होंगी। ऐसे 360 दिनों का एक देवी वर्ष होगा। इस देवी वर्ष के मानवी वर्षों की गणना करना असंभव जैसा ही है। देवी की पूर्णायु की गणना करने के लिए सुपर कम्प्युटर ही लगेंगे। वे भी कर पाएंगे या नहीं, कहना कठिन है।

इस गणना का विवरण वासुदेव पोद्दार ने अपनी पुस्तक विश्व की कालयात्रा में दिया है। वहाँ तत्संबंधी श्लोकों को भी उद्धृत किया गया है। केवल संदर्भ के लिए वे श्लोक यहाँ दिये जा रहे हैं।

तदेकसप्ततिगुणं मन्वन्तरमिति स्मृतम्। मन्वन्तरद्वयेनेह शक्रपातः प्रकीर्तितः॥

एतन्मानेन वर्षाणां शतं ब्रह्मक्षयः स्मृतः। ब्रह्मक्षयशतेनापि विष्णोरेकमहर्भवेत्॥

एतद्दिवसमानेन शतवर्षेण तत्क्षयः। तत्क्षयस्त्रिगुणोऽष्टाभी रुद्रस्य त्रुटिरुच्यते॥

एवमाब्दिकमानेन प्रयातेऽब्दशते द्विजाः। रुद्रश्चात्मनि लीयेत निरालम्बे निरामये॥ **बृहत् पाराशर स्मृति 12/188-191**

चतुर्युगसहस्राणि दिनं पैतामहं भवेत्। पितामहसहस्राणि विष्णोश्च घटिका मता॥

विष्णोर्द्वादशलक्षाणि कलार्धं रौद्रमुच्यते॥ **देवीमीमांसा भाष्य, उत्पत्ति पाद, सूत्र 04**

चतुर्युगसहस्राणि ब्रह्मणो दिनमुच्यते। पितामहसहस्राणि विष्णोरेका घटी मता॥

विष्णोर्द्वादशलक्षाणि निमेषार्धं महेशितुः। दशकोट्यो महेशानां श्रीमातुस्त्रुटिरूपकाः॥ **शक्ति रहस्य**

इन विवरणों के आधार पर गणना करने से निम्न तालिका प्राप्त होती है।

ब्रह्मा की पूर्णायु 31,10,40,00,00,00,000 मानवी वर्ष (31.1×10^{12})

विष्णु की पूर्णायु 1,46,62,40,00,00,00,00,00,000 मानवी वर्ष (14.6×10^{17})

शिव की पूर्णायु44,78,97,60,00,00,00,00,00,00,00,00,00,000 मानवी वर्ष (44.7×10^{24})

जगदंबा की पूर्णायु 4,47,89,76,00,00,00,00,00,00,00,00,00,00,00,00,000 मानवी वर्ष (4.47×10^{31})

13.4 काल की असीमितता तथा अनंतता का समाजविज्ञान

इस विवरण से यह स्पष्ट है कि सृष्टि रचना की प्रक्रिया अनंत है और उसकी थाह पाना या उसकी गणना कर पाना मनुष्यों के बस की बात नहीं है। हम केवल महाकाल को विनम्रतापूर्वक स्मरण कर सकते हैं। सृष्टि के इस अनंत विस्तार को अनुभूत करना, उस पराशक्ति जो इस सृष्टि की निर्माता और संचालक है, को अनुभूत करना ही इस कालगणना के कथन का उद्देश्य है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव या रूद्र तथा माँ जगदंबा की अनंतता का जो व्याख्यान समस्त पौराणिक साहित्य में पाया जाता है, वह इस काल और ब्रह्मांड की असीमितता और अनंतता का ही व्याख्यान है। कालगणना की इस असीमितता और ब्रह्मांड की इस अनंतता को अनुभूत करने से व्यक्ति को अपनी क्षुद्रता पता चलती है। तब उसके मिथ्या अहंकारों का नाश हो जाता है।

अहंकार नष्ट होने से वह अधिक विनम्र और निस्स्वार्थी होता है। इससे एक श्रेष्ठ समाज का निर्माण होता है।

विचारणीय विषय यह है कि कालगणना गणित और भौतिक पदार्थ विद्या का एक शुष्क विज्ञान है, परंतु उस शुष्क विषय को अध्यात्म का आधार बना देना, यह भारतीय कालज्ञों का ही काम है। इस गणित विद्या को समाज जीवन का आधार बनाना और उसके आधार पर एक सुखी तथा संतुष्ट समाज का निर्माण करना, जिसमें अपराध न्यूनतम हों और शांति सर्वत्र हो, यह भारतीय ज्योतिषियों के कारण ही संभव हुआ है। इस दृष्टि से विचार करें तो हम समझ सकेंगे कि भारतीय ज्योतिष केवल विज्ञान मात्र नहीं है, वह समाजशास्त्र भी है।

इस बात को हम ग्रामीण पृष्ठभूमि की कहावतों से अच्छे से समझ सकते हैं। कितनी भी बड़ी परेशानी हो, व्यक्ति कहता है कि अरे ये तो ग्रहों का प्रभाव है और वह तनावमुक्त हो जाता है। वह कहता है, अरे ये तो माँ जगदंबा की कृपा है और वह तनावमुक्त हो जाता है। परेशानियों से तनावमुक्ति पाना आज के सामाजिक जीवन की सबसे बड़ी चुनौती है। यह कठिनतम कार्य भारतीय ज्योतिष शास्त्र सरलता से कर देता है, इस गणना की अनुभूति से।

13.5 अभ्यास/बोध प्रश्न

1. भारतीय परंपरा के अनुसार, कालगणना में कल्प से बड़ी किन्हीं दो इकाइयों के नाम बताइए।
2. एक कल्प ब्रह्मा के समय की किस इकाई के बराबर है?
3. ब्रह्मा का 1 दिन यानी 12 घंटे कितने मानवीय वर्षों के बराबर होता है?
4. एक ब्राह्म वर्ष में कुल कितने कल्प होंगे?
5. वर्तमान ब्रह्मांड की आयु ब्रह्मा के कितने वर्षों के बराबर है?
6. ब्रह्मांड की कुल आयु कितने मानवी वर्षों के बराबर है?
7. वर्तमान ब्रह्मांड की आयु का लगभग कितना समय व्यतीत हो चुका है?
8. काल को अक्सर क्यों कहते हैं?
9. ब्रह्मा की संपूर्ण आयु विष्णु के कितने समय के बराबर है?
10. 'एक घड़ी' का काल कितना होता है?
11. 1 दिन में कुल कितने मुहूर्त होते हैं?
12. 1 दिन में कुल कितनी घड़ियां होती हैं?
13. शिव की आधी कला विष्णु के कितनी आयु के बराबर है?
14. 1 दिन में कुल कितनी कला होती हैं?
15. 'त्रुटि' क्या है?
16. 1 दिनरात में कितनी त्रुटियां होती हैं?
17. ब्रह्मा की पूर्ण आयु क्या है?
18. विष्णु की पूर्ण आयु क्या है?

19. शिव की पूर्ण आयु क्या है?

20. जगदंबा की पूर्ण आयु क्या है?

13.6 सारांश

काल के विज्ञान को समझने के लिए उपरोक्त विवरण अत्यधिक सहायक है। काल अपरिमेय है, अनंत है, अक्षर है। यह हम घंटा, दिन, महीनों, वर्ष और प्रकाशवर्ष से नहीं समझ सकते। यह समझने के लिए हमें काल की अनंतता को अनुभव करना होगा। यह अनंतता हमें तब अनुभव होगी, जब हम ब्रह्मांड और सृष्टि की अनंतता को अनुभव करेंगे। इस अनंतता को उपरोक्त चारों वर्षों से समझा और अनुभव किया जा सकता है। जब भगवद् गीता में योगीश्वर श्रीकृष्ण कहते हैं कि हम दोनों (कृष्ण और अर्जुन के) के अनेक जन्म व्यतीत हो चुके हैं, तुम उन्हें नहीं जानते, मैं जानता हूँ। इसका तात्पर्य यही है कि योगीश्वर श्रीकृष्ण काल की इस अनंतता को अनुभव करते थे और अर्जुन उस अनुभूति से शून्य था। काल के इस विज्ञान का सूक्ष्मतम रूप है पुनर्जन्म का सिद्धांत। पुनर्जन्म का सिद्धांत भी काल की अनंतता को स्थापित करता है। जैसे काल अनंत है, वैसे ही जन्म और मृत्यु का चक्र भी अनंत है। इस अनंत चक्र को समझ कर जीवन चलाना ही मुक्त होना है। भारत का औपनिषदिक दर्शन यही बतलाता है।

13.7 शब्दावली

ब्रह्मा – हमारा वर्तमान ब्रह्मांड

देववर्ष – ब्रह्मांडीय वर्ष (360 मानवी वर्ष)

महाकाल – काल की अनन्तता का प्रतीक

प्रकाशवर्ष - प्रकाश वर्ष (light year), जो प्रव (ly) द्वारा चिन्हित करा जाता है, लम्बाई की एक मापन इकाई है। यह लगभग 95 खरब (9.5 ट्रिलियन) किलोमीटर की होती है। अन्तर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ के अनुसार, एक प्रकाश वर्ष वह दूरी है जो प्रकाश अपने निर्वात (बिना वायु) में एक वर्ष में पूरा कर लेता है। यह इकाई मुख्यत: लम्बी दूरियों यथा दो तारों या गैलेक्सी जैसी अन्य खगोलीय वस्तुओं की बीच की दूरी मापने में प्रयोग की जाती है।

कल्प – यह भी समय की दीर्घ इकाई है, जिसका दूसरा अर्थ ब्रह्मा का एक दिन भी है ।क्योंकि कल्प शब्द अन्य अर्थों में भी प्रयोग होता है। अत:जब काल की इकाई की बात करते हुए कल्प शब्द का प्रयोग होगा, तो उसको सपष्ट करने के लिए हम कह सकते हैं कि यह ब्रह्म का एक दिन है। इसके आगे और भी गणना की जाती है, अत:इस संख्या को एक नाम देना आवश्यक था।

13.8 संदर्भ ग्रंथ सूची

- विश्व की कालयात्रा, वासुदेव पोद्दार, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

- द्रष्टव्य जगत का यथार्थ भाग 1, डॉ. ओमप्रकाश पांडेय, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- सूर्य सिद्धांत, स्व. महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, डॉ. रत्नकुमारी स्वाध्याय संस्थान, इलाहाबाद, 1940

अभ्यास/बोध प्रश्नों के उत्तर

1. विष्णु वर्ष, शिव वर्ष
2. ब्रह्मा के 1 दिन के बराबर
3. 4 अरब 32 करोड़ मानवीय वर्षों के बराबर
4. 720 कल्प
5. 100 वर्षों के बराबर
6. 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों के बराबर
7. लगभग आधा (ब्रह्मा के 50 वर्ष)
8. क्योंकि भारतीय परंपरा के अनुसार, काल का क्षरण नहीं होता।
9. एक घड़ी के काल के बराबर
10. आधे मुहूर्त के बराबर
11. 30 मुहूर्त
12. 60 घड़ियां
13. विष्णु की पूर्ण आयु का 12 लाख गुना के बराबर
14. 900 कला
15. एक क्षण का 1/ 2700 वां भाग
16. 9,11,25,000 त्रुटियां
17. 31.1×10^{12} मानवी वर्ष
18. 14.6×10^{17} मानवी वर्ष
19. 44.7×10^{24} मानवी वर्ष
20. 4.47×10^{31} मानवी वर्ष